

## विनाश की ओर अग्रसर

ईता महरोत्रा

“पास द जे” दिल्ली विश्वविद्यालय की भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर ये शब्द दिन में न जाने कितनी बार सुनाई देते हैं। चाहे परिसर की चाय की दुकान कैटीन हो, नुक्कड़ हो या घने पेड़ों के नीचे झुंड बनाकर गपियाते छात्र-छात्राएं हों, ‘जे-टॉक’ हर जगह सुनाई देती है। जो इस ‘जे-टॉक’ के विषय में नहीं जानते उनकी जानकारी के लिए बता दूं कि दिल्ली विश्वविद्यालय में ‘जे’ के मायने हैं तम्बाखू और हशीश को मिलाकर कागज़ में लपेट कर पी जाने वाली सिगरेट या ज्वाईंट। विश्वविद्यालय परिसर में इस मादक ज्वाईंट की मदद से सामाजिक रिश्ते आसानी से बनाए जा सकते हैं- किसी एक समूह में जगह पाने का यह एक रामबाण तरीका है। यह जे-ज्वाईंट अक्सर छः या सात सदस्यों के गुट में बांटकर फूँका जाता है।

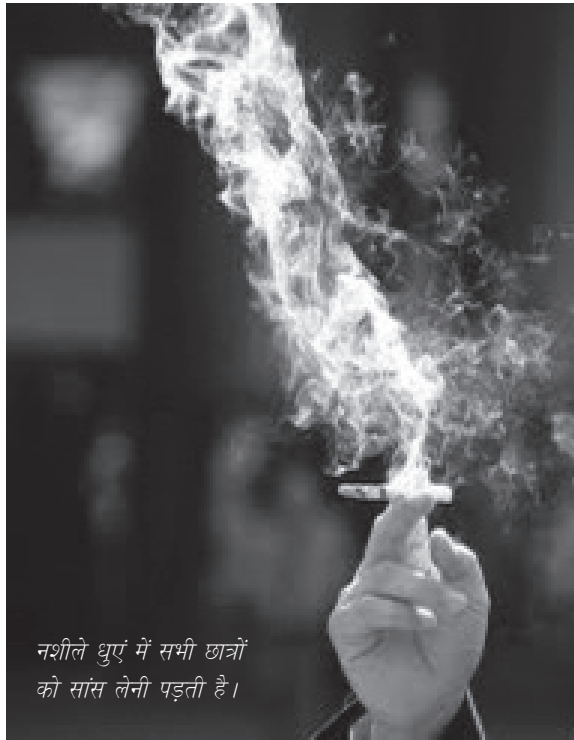
क्या आप इस जानकारी से चिंतित हैं? विश्वविद्यालय के विशाल गेट से अंदर जाते समय मेरा भी यही हाल था। पर इस जगह छः महीने गुज़रने के बाद मैं इस सलीके और कैम्पस जीवन की इस सच्चाई की आदी हो चली हूँ- ये अब मुझे न उकसाती है और न डराती है।

मैं उस दौर की युवा की हूँ जहां नशा/ड्रग्स करना चिप्स या चाकलेट खाने जैसी आम बात हो गयी है। विश्व के हर शहर में ड्रग्स का सेवन बढ़

रहा है। इस समस्या का वर्ग नस्ल, जातीयता या लिंग से कोई लेना देना नहीं है। वर्ल्ड ड्रग्स रिपोर्ट 2006 के अनुसार दुनिया में दो सौ करोड़ लोग ड्रग्स का सेवन करते हैं। भारत के यूएनओडीसी तथा सामाजिक न्याय व सशक्तिकरण मंत्रालय द्वारा किए अध्ययन से पता चला है कि देश में 73 करोड़ युवा नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। इनमें हशीश व भांग सबसे आसानी से मिलने वाली अवैध पदार्थ हैं जिसका उपयोग विश्व स्तर पर 141 करोड़ लोग करते हैं।

विश्वविद्यालय परिसर में 15-20 जमकर नशा करने वाले छात्र/छात्राएं होते हैं और हर साल इस समूह में पांच-दस नए सदस्य शामिल हो जाते हैं। हालांकि यह कहा जा सकता है कि ज़्यादातर युवक नशा करते हैं पर हर समूह में कुछ युवतियां भी होती हैं।

इन गुटों के मिलने का कोई निश्चित समय नहीं होता। कुछ सुबह आठ बजे से ही चिलम फूंकना शुरू कर देते हैं तो कुछ कक्षाओं के बीच या दिन के किसी भी समय अथवा रात को होस्टल के कमरों या अड्डों पर नशा करते पाए जाते हैं। लड़कियों के होस्टल में अधिक कड़े नियमों के चलते ऐसा करना मुश्किल होता है। परन्तु लड़के किसी न किसी कोने का जुगाड़ कर ही लेते हैं।



नशीले धुएँ में सभी छात्रों को सांस लेनी पड़ती है।

विश्वविद्यालय परिसर में कुछ खास अड्डे हैं जहां 'जे समूह' पाये जाते हैं- कॉफी हाउस, कैटीन, रिहाइशी होस्टल और डी-स्कूल जो विभिन्न कालेजों के युवाओं के मिलने का स्थान होने के कारण काफी भीड़ वाला इलाका होता है। इस नशे पर युवा बारह सौ से पंद्रह सौ रुपये माहवार खर्च करते हैं जो उनके जेबखर्च से निकलता है।



धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

दिलचस्प बात यह है कि लड़के जहां हशीश या भांग की सिगरेट बनाकर पीते हैं वही लड़कियां इसका सेवन केक व बिस्कुट बनाकर भी करती हैं।

ड्रग्स के इस खुलेआम और अत्याधिक सेवन के पीछे कई कारण हैं। आसानी से ड्रग्स का मिलना सबसे अहम वजह है। हालांकि विश्वविद्यालय परिसर में ये नहीं मिलते पर शहर में काफी ऐसी जगहें हैं जहां इन्हें खरीदा जा सकता है। दूसरा मुख्य कारण है युवाओं का उन गतिविधियों के प्रति रूझान जिनकी उन्हें मनाही हो या जो वर्जित हों। दिल्ली में सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान अपराध है पर युवा खुलेआम सिगरेट पीना शान की बात समझते हैं।

इस विषय पर विश्वविद्यालय के शिक्षकों और प्रोफेसरों के नज़रिये को जानने के लिए मैंने उनसे बात की। एक प्रोफेसर ने कहा, 'अगर आप जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं तो आपको अपनी इच्छानुसार जीने की आज़ादी है। पर मुझे इन युवाओं की दूसरों के प्रति बेरूखी से आपत्ति है। छात्र खुले आम सिगरेट पीते हैं और इस बात की कोई परवाह नहीं करते कि उनके अन्य साथियों को भी नशीले धुएं में सांस लेनी पड़ती है।'

एक अन्य छात्र जो सिगरेट नहीं पीता ने नाराज़गी जताई, 'कॉलेज में धूम्रपान बंद होना चाहिए। जिन्हें ज्वाइंट

फूंकना है वे कहीं और जाकर ऐसा करें तो सही है। यहां सभी को ज़हरीली हवा में सांस लेने को मजबूर करना गलत है।'

तो फिर ऐसा क्या किया जाए कि धूम्रपान करने वाले दूसरों की परेशानी का कारण न बनें। एक उदारवादी प्रोफेसर ने सलाह दी, 'कालेज में धूम्रपान कक्ष होना चाहिए। छात्रों पर कम से कम पाबंदी होनी चाहिए जिससे वे सही-गलत की पहचान कर सकें।'

पर अधिकांश शिक्षक वर्ग इसके विरुद्ध हैं- 'धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है। यह गलत है और इसके नियम पुरुष व स्त्रियों के लिए समान हैं।'

हशीश, भांग व अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन से याददाश्त कमज़ोर होना, सोचने-समझने की शक्ति में बिखराव, हृदय गति बढ़ना, घबराहट, सरदर्द, शारीरिक बल व तालमेल में कमी जैसे गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। युवतियों में इससे भावनात्मक कमज़ोरी, माहवारी समस्याएं, थकान और झुंझलाहट जैसी परेशानियां भी पैदा हो सकती हैं।

इस समस्या से युवाओं को बाहर निकालने का एकमात्र सामाजिक हल है नशाखोरी व धूम्रपान विरोधी जानकारी का प्रसारण, इसके दुष्प्रभाव पर जागरूकता फैलाना तथा जो इस लत को छोड़कर इससे बाहर निकलना चाहते हैं उनको सहयोग और प्रोत्साहन देना। विडम्बना लेकिन यह है कि विश्वविद्यालय में धुएं के छल्लों को तो बिखरते-फैलते देखा जा सकता है परन्तु परामर्श, सलाह, सहयोग समूह जैसे कोई प्रयास यहां नज़र नहीं आते। क्या इस चुनौती को कोई स्वीकार करने के लिए सामने आयेगा?

साभार: विमेंस फ़ीचर सर्विस

ईता महरोत्रा विमेंस फ़ीचर सर्विस के लिए लिखती हैं।